राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

पावन हों शिक्षा संस्कार
शुद्ध आचरण का आधार

काम काज हो या व्यापार
सभी जगह अच्छा व्यवहार

मित्र पड़ोसी घर परिवार
संबंधों में निश्छल प्यार

यदि हो पाएं तो संसार में
होगा सुख शांति प्रसार

वर्ष 67 जुलाई-सितंबर 2019 अंक 3

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ
1.	भजन	01
2.	गुरु का ध्यान (तसव्वुर शेख) *लालाजी महाराज*	02
3.	दीपावली का प्रसाद *डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज*	08
4.	उपदेश *अनमोल वचन*	11
5.	मन-वचन-कर्म से किया गया पश्चात्ताप व श्रद्धा से की गई प्रार्थना का सुपरिणाम *परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब*	14
6.	हुसेन मन्सूर *प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र*	19
7.	विवेक विचार	28
8.	अमृत-वचन	31
9.	कर्म सिद्धान्त	32
10.	शोक समाचार	36

राम ॐ संदेश

संस्थापक

ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

संरक्षक

ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी

सम्पादक

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

(सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष)

वर्ष 67 | जुलाई–सितम्बर 2019 | अंक–3

भजन

पीले प्याला, हो जा मतवाला, प्याला प्रेम हरि रस का रे,

पाप पुण्य तू भोगन आया, कौन तेरा है तू किसका रे,
जो दम है बन्दे हरी भज ले, जीवन है सपना निशि का रे।

बालपन हँस खेल गंवाया, तरुण भया नारी फँसता रे,
वृद्ध भयो कफ बाय ने घेरा, खाट परा नहीं कुछ बस का रे।

नाभि–कमल में है कस्तूरी, कैसे भ्रम जावे पशु का रे,
बिन सत्गुरु ऐसे दुख पावे, जैसे मृग भटके बन का रे।

लख चौरासी उबरा चाहै, छोड़ै नारी का चस्का रे,
'चरणदास' सुखदेव कहत है, क्यों नख सिख में जहर भरा रे।

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

गुरु का ध्यान (तसव्वुर शेख)

पूज्य लालाजी साहब (दादागुरु) ने अपने एक पत्र में एक शिष्य को गुरु के ध्यान का मर्म ऐसे समझाया था :-

मुर्शिद या गुरु की मिसाली शक्ल उसकी हरकात, इख़लाक और आदत, (रहनी–सहनी, चरित्र व स्वभाव) की तरफ़ दिल में नज़र रखना, याद क़ायम रखना, उसका ध्यान बांधना वगैरा सूफियों और संतमत के अभ्यासियों और साधकों के यहाँ का शग़ल है, इसको शग़ल राब्ता (गुरु का ध्यान) भी कहते हैं और बरज़ख पीर (बीच का गुरु) भी इसका इस्तलाही (परिभाषिक) नाम है।

चित्त को एकाग्र करने के लिए यह अमल ऐसा पुरतासीर (प्रभावशाली शक्ति से भरा हुआ) है कि ज़ादू की तरह अपना करिश्मा दिखाता है, बल्कि और रास्तों से यह क़रीब और काम को सहज कर देता है। शर्त यह है कि जिस मुर्शिद का ख़्याल बाँधा जावे वह मुकम्मिल हो और संतमत में गुरु की हैसियत रखता हो, जिसका बातिन का तज़किया (आंतरिक हृदय) इन्द्रियों और इच्छाओं से शुद्ध हो चुका हो और माया की हद के पार पहुँच चुका हो, वर्ना फिर साधक माया जाल का बन्धुआ हो जाएगा और शैतान–सिफ़त हो जाएगा। इसलिए निहायत अहतियात (आवश्यक सावधानी) लाज़िमी है कि हर शख़्स का ध्यान न बाँधा जाये। बाज़ लोगों ने इसलिए इसकी क़तई मुमानियत (मनाही) कर दी है।

संतमत में शुरु में सत्संग के वक़्त मुर्शिद (गुरु) के चेहरे पर भौहों के दरम्यान नज़र जमाने का इशारा है। लेकिन अन्दर की तरफ अभ्यास करने के लिए ख़ास मुक़ाम और जगह बताई जाती है, जो ज़रूरत के वक्त और मौके पर उसकी तरक़ीब के साथ साधक को बतलाई जाती है।

आम तौर पर खुले हुए तरीके से बताने की मुमानियत (निषेध या मनाही) है। वजह मना करने की साफ़ ज़ाहिर है कि बेसमझ लोग शौक में आकर बिना मौक़ा और मुनासिबत के इस अमल का बेजा इस्तेमाल न कर डालें। खुद मुसीबत में फँसे और दूसरों को भी आफ़त में डालें।

बाज़ तरीके के बुर्जुगान (गुरु लोग) शग़ल-राब्ते का उस वक्त तक हुक्म नहीं देते जब तक यह नहीं देख लेते हैं कि साधक में प्रेम का झरना उछल पड़ा है या मौहब्बत का ज़ज्बा भड़क उठा है, उसको ऐसी उमंग आई हुई है कि बिना कहे और सुने ख्वामख़ाह वह शक्ल को सामने रखने लगा है। अगर ऐसा ग़लबा (घेरा) मुहब्बत का हो जाये कि शक्ल दूर करने से भी न हटे तो यह कुदरत का तक़ाजा है और लहर का रुख बहाव की तरफ़ है, वर्ना ज़बरदस्ती शक़्ल को सामने क़ायम करना एक तरह का हठ है जो मूर्ति-पूजन की हद में आ जाता है।

इस हठ और ज़बरदस्ती शग़ल करने का वही नतीजा होता है जैसे कि अक्सर कई तरीकों में 'अनहद शब्द' सुनने के लिए कानों में उँगलियाँ लगाना। इस तरह से नतीजा यह होता है कि 'शब्द' तो सुनाई दे जाता है मगर आरज़ी (थोड़ी देर को) इसमें बीमारी का भी डर रहता है। इस शग़ल का असली मतलब और फ़िलसफ़ा निहायत बारीक और गहरा है, जिसका इस वक्त दलील के साथ साबित करना मुनासिब नहीं।

लेकिन मुख़्तसिर (संक्षिप्त) और इशारों के तौर पर इतना कहना इस वक़्त काफ़ी है कि 'बरज़रख' कहते हैं दरमियानी, बीच वाली चीज़ को, यानी जो एक चीज़ को दूसरी के साथ जोड़ देने में ज़रिया या वास्ता (माध्यम) हो। पीर या गुरु दरम्यानी मीडियम (माध्यम) है जीव को परमात्मा से जोड़ने का।

यह समझ में न आये तो इस तरह ख़्याल करना चाहिए कि शीशा ज़रिया है अपनी शक्ल देखने का, किताब है ज़रिया इल्म (विद्या) सीखने का, उस्ताद है ज़रिया किसी हुनर (कला) के हासिल करने का। इसी तरह जिन्दा गुरु और मुकम्मिल हस्ती ज़रिया है परमात्मा की याद दिलाने का, उस ब्रह्म की नजदीकी हासिल करवाने का।

यकीनन बिला शुबह गुरु की मिसाली शक्ल साधक और ब्रह्म के दरमियान एक जीता जागता वास्ता (माध्यम) है। उसकी आदत, इखलाक, तर्जेअमल (कार्यशैली) दुनियावी व्यवहार और रुहानियत का प्रभाव साधक में बिजली की तरह उसके दिल और दिमाग में दाखिल होकर सराहत करता है और हरदम ताजा रूह होता रहता है।

यह अमल रास्ते की मुश्किलें दूर करने के लिए या दूसरे अभ्यासियों की रूखी-फीकी रुकावटों को आसान बना देने में बड़े काम की चीज़ है। लेकिन जिस साधक को यह ख़्याल खुद-ब-खुद पैदा हो जाये और सामने से न हटे और दूर करने

पर भी अलहदा न हो, और फिर उसके साथ उसकी वजह भी समझ में न आवे, तो वाकई इस कदर जल्द रास्ता आसानी से तय हो जाता है कि खुद को और दूसरे देखने वाले को हालत की तब्दीली (आध्यात्मिक प्रगति) देखकर ताज्जुब होता है।

मेरे एक सत्संगी भाई ने एक से अनेक और अनेक से एक का शग़ल (अभ्यास) दरयाफ्त किया है। दरअसल उनकी समझ में यह मुअम्मा (पहेली) नहीं आया कि यह दो तरह के मराकबे (आन्तरिक अभ्यास) है। इस मिसाल की तरफ ग़ौर कीजिए - सत्संग के वक्त या जब 'हल्का' (सामूहिक सत्संग) होना है तो ऐसा होता है कि तवज्जोह देने वाला एक जगह बैठकर अपने सामने बैठने वालों की तरफ मुतवज्जह (आकर्षित) होता है।

एक शख़्स तवज्जोह में कोई ख़्याल वाहिद (प्रवाहित) एक से ज्यादा लोगों के मज़में में, एक ही वक्त में और एक ही साथ दाखिल करता है.... और कबूल करने वालों की तादाद उस वाहिद (चल रहे) ख़्याल को अलग-अलग कबूल करती है, तो अब इस अमल-दुतरफा पर ग़ौर की निगाह से देखना चाहिए। एक वाहिद शख़्स के एक वाहिद ख़्याल को मुख्तलिफ (विभिन्न) लोगों ने अपनी-अपनी तवज्जो अलग-अलग एक खास नुकते या मरकज (बिन्दु या केन्द्र) की तरफ लगा दी।

एक वाहिद शख़्स एक से अनेक हो गया- यानी उसी की एक जाती हुई तवज़्ज़ह मुख़्तलिफ लोगों मे पैबस्त (ग्रहण) हो गई।

दूसरी तरफ पच्चीस या हज़ार आदमियों की जुदा-जुदा तवज़्जह एक मरकज़ यानी केन्द्र पर आ कर जमा हो गई और मिल-मिला कर एक शक्ल को कबूल कर लिया। इसी को 'एक से अनेक और अनेक से एक' का शग़ल या अभ्यास कहते हैं। यह भेद है संघटन के सामूहिक सत्संग का और यह अमल (अभ्यास) खास और सबसे ज़्यादा व्यवहार में लाने वाला है।

जब इश्क ज़ोर पर आता है और मारफ़त हो जाती है तो तौहीद (अनेक से एक पर आना) अपने आप भागी आती है, बुलाने की ज़रूरत नहीं होती।

दिल की अंगीठी में इश्क की आग भड़क रही है, जिस को ग़रज़ हो आकर बुझाये। जलता है जल जायेगा उसकी क्या परवाह है मगर नहीं.....

आग जलती देखकर, साईं आये धाय।
प्रेम बूंद से छिड़क कर जलती लई बुझाय॥

बच्चा जब रोता है तब माँ हज़ार काम छोड़कर चली आती है। इसी तरह तलब, इश्क और मारफ़त के पैदा होते ही तौहीद (एक भाव) आ जाती है और ताहिद (तलाश करने वाला) व मतलूब (जिसकी तलाश की जाती हो) दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। जब तौकीद पुख़्ता हो जाती है तो इस्तगना (उपरामता) आ जाती है। एक हालत कभी नहीं रहती। बच्चा बेपरवाह हो गया, माँ को पहचान लिया। उससे मिलकर एक हो गया। जब वो खेलता फिरता है और माँ बुलाती है तो खिलखिलाकर हँसता है और आगे दौड़ जाता है। दोनों में खेल हो रहा है। कौन सा खेल? तौहीद का खेल।

बच्चा बढ़ा और बढ़कर अपने आप में महब (गुम) हो जाता है। यही फ़ना है। तौहीद की मंजिल से ऊपर आ गया, खुदी में बेखुदी है। कुछ दिनों यह हालत रही, फिर बक़ा (पुर्नजीवन है)। अब उसका पीछे की मंजिल से कोई सरोकार नहीं रहा।

बग़ैर एक गुरु की मदद से रुहानियत (आध्यात्म विद्या) का प्राप्त करना आसान काम नहीं है। माँ अगर न हो तो बच्चे का इश्क़ पुख़्ता (पक्का) कैसे हो? उस्ताद अगर न हो तो शार्गिद (विद्यार्थी) में पुख़्तगी (परिपक्वता) कैसे आवे? इसी तरह अगर रुहानियत (आध्यात्म) का गुरु न हो तो इल्म रुहानियत (आध्यात्म विद्या) कैसे नसीब हो? यहाँ तो कदम-कदम पर सहारा लेने की ज़रूरत है। मगर खैर कौन ज्यादा समझाये।

सुनो, फिर वही बात दोहराई जाती है। तालिब (जिज्ञासु) में रुहानियत (आध्यात्म) की तलब पैदा हुई। वह गुरु की ख़िदमत में गया और बच्चों की तरह उनके कलाम (वचनों) में से रुहानी ग़िज़ा (आत्मिक आहार) पाने लगा और उससे पलने लगा। मुहब्बत से गुरु का प्रेम पैदा हुआ। प्रेम से उसके असली रूप की पहचान आई और इस पहचान से गुरु की जात (व्यक्तित्व) के साथ यकसू (एकता) होने का मौका हाथ आया। कबीर साहब फरमाते हैं :-

जब मैं था तब गुरु नहीं, जब गुरु हैं मैं नाहीं।
प्रेम गली अति सांकरी, यामे दो न समाहिं।।

अब गुरु चेला दोनों मिलकर एक हो गये। एक के दिल का असर दूसरे के दिल पर पड़ने लगा। संतमत के सिलसिले की तालीम को समझने, उस पर चलने वाले के लिए इसके बाद वही उदासीनता या इस्तग़ना, वही बक़ा और सत्यलोक के दर्जे

नसीब हो जाते हैं।

रघुपति राघव राजा राम

(परम सन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज द्वारा की गई इस पद की आध्यात्मिक व्याख़्या)

''रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम''।

इस पद का सीधा साधा मतलब सब जानते हैं। लेकिन अगर हम इस छोटे से पद के हर शब्द के अन्दर घुस कर देखें, तो इसके अन्तर्गत हम एक बहुत ही गहरा तत्वज्ञान से भरा अर्थ छिपा हुआ पायेंगे, जो आँखों को चकाचौंध कर देगा।

सब जानते हैं कि दुनिया और उसके अन्दर सब जीव–जन्तुओं का पालन पोषण और जिन्दा रखने वाली केवल एक चीज़ 'चैतन्यता' है जो रचना की हर रग में छिपी हुई दो तरह से काम कर रही है। यदि यह न हो तो कोई जीव जिन्दा नहीं रह सकता। सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में उस परम परमेश्वर (कुल्ल मालिक) से जो सबका आधार है, एक धार साये (परछाई) के रूप में निकलती है। हम इस धार को चैतन्यता की धार कह सकते हैं। यह धार दो तरह से नीचे उतरती है– नाम और रूप के द्वारा। इस समय मैं रूप को लेकर बातचीत करूँगा, वरना विषय बहुत लम्बा हो जायेगा। इसलिए केवल रूप को लेकर इसकी सच्चाई को समझाने की कोशिश करता हूँ।

रोशनी या ताप नीचे दिये हुए दो रूपों में स्थित होता है रोशनी, प्रकाश व प्रकाश की किरणें एक तरफ और गरमी हरारत, ताकत व शक्ति दूसरी तरफ। विवेक शक्ति, विकास, समझ, ज्ञान व बुद्धि गरमी व ताकत वगैरा सब मिलमिलाकर हर जीव जन्तु में काम करती हुई नज़र आ रही हैं। अगर ऐसा नहीं है तो शरीर मुर्दा है। अब इस ब्रह्माण्ड में सबसे बड़ी हस्ती सूर्य को माना गया है जो रोशनी और गरमी का भण्डार है। इसके समझाने बुझाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसे सभी जानते हैं। पैदा हुई हर चीज़ में रोशनी और गरमी सूरज ही के द्वारा आती है। इसके विरुद्ध अन्धकार और शीतलता चाँद के अन्दर है। रचना में सबसे उत्तम पैदाईश इन्सान की है और इन्सानों में भी जो सबसे अधिक शक्तिशाली और बुद्धिमान है वह राजा है। क्षत्रिय धर्म के लिए केवल शक्ति व बुद्धि की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि इसके साथ–साथ राजा ज्ञानी भी हो और ज्ञान भी सच्चा। इतनी भूमिका के बाद अब असली ध्येय पर आता हूँ। 'रघु' दरअसल प्रकाश–रोशनी की किरण–ज्ञान, बुद्धि व समझ को कहते हैं।

क्षत्रिय वंश के राजा जो सूर्यवंशी कुल में हुए वह प्रकाश और ज्ञान यानी सच्चे ज्ञान होने की वजह से सूर्यवंशी कहलाये और इन्हीं गुणों के कारण राजा राघव के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह रघुपति थे यानी उनका व्यक्तिव न केवल सूर्य की तरह प्रकाशमान और शक्तिशाली था बल्कि उन्होंने अपना गहरा सम्बन्ध ब्रह्म विद्या से कर लिया था, जिसके कारण वे इसके अधिकारी कहलाये। 'राघव' ज्ञान व शक्ति का वह पूर्ण स्वरूप है जो न केवल प्रकाश, शक्ति व सच्चे ज्ञान की वास्तविकता को जानता है बल्कि जानकर बाकायदा उनसे काम ले सकता है। किसी गुण को हासिल करके एक तरफ बैठ जाना पूर्णता नहीं है बल्कि उनको काम में लाना और दूसरों की मदद करना और गिरे हुए को उठाना मनुष्य की पूर्णता है- सृष्टि की गरज़ यानी 'एकोहम भवस्याम:' जो उत्पत्ति की मन्शा है इसको पूरा करता है। पूर्ण इन्सान की इन्द्रियाँ व अन्त:करण के सब अंगों का पूर्ण विकास होकर सम अवस्था में आना ही परम लक्ष्य है (this is perfection of life) राजा वही हो सकता है, जो अपने देश के सब ज्ञानियों से श्रेष्ठ हो और उसकी इच्छाशक्ति सब पर छा जाये और ऐसे शक्तिशाली राजा को राजा राम जब कहेंगे जब ब्रह्माण्ड का कण-कण भी उसके दिव्य तेज से खाली न हो। उसकी शक्ति हर जगह काम करती है। बिना इस शक्ति के सब काम बन्द हो जायेंगे। ऐसी सर्वव्यापी हस्ती का नाम ही राजा राम है, जो रग-रग में रमा हुआ अपना खेल खेल रहा है। पतित पापी को कहते हैं। पाप अन्धकार है और प्रकाश के आते ही अन्धकार जाता रहता है। कालिम पुरुष सन्त सद्गुरु के सत्संग में जाते ही पाप की ताकत कमज़ोर पड़ जाती है और खत्म हो जाती है बस ऐसी हस्ती जो पापों को अपने अन्दर खैंच ले- हैवान से इन्सान बना दे, पतित पावन कहलाती है। अब विचार कीजिए ऐसा पतित पावन कौन हो सकता है। उत्तर यही होगा कि जिसमें ऐसी शक्ति हो जो पहाड़ को हिला दे, जिसमें सच्चा ईश्वरीय प्रेम व प्रकाश झलकता हो, और जिसका दिव्य तेज घने से घने अन्धकार को दूर कर दे। यह है राजा राम का स्वरूप जो स्वयं प्रकाशवान है और शक्ति का पूर्ण रूप है और उनके साथ उनकी मददगार सीता यानी शक्ति-अटल-दृढ़ इच्छाशक्ति है। बस हम पूर्ण दिव्य ज्योर्तिमय राम और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति सीताजी, यानी मौजूदा गुरु महाराज की पवित्र हस्ती को नमस्कार करते हैं।

प्रवचन गुरुदेवः डा.श्रीकृष्ण लालजी महाराज

दीपावली का प्रसाद

तीन शरीर हैं। एक शरीर हमारा बाहरी जिस्म है, दूसरा मन का शरीर और तीसरा आत्मा का। बाहरी जिस्म स्थूल शरीर कहलाता है, मन का जिस्म सूक्ष्म और आत्मा का जिस्म कारण शरीर कहलाता है। स्थूल शरीर पंच तत्व या elements से बना है जिसमें मिट्टी, पानी, हवा, आग और ईथर (आकाश) मिले हुए हैं। मरने के बाद यह सब अलग–अलग हो जाते हैं। मिट्टी तो मिट्टी में मिल जाती है और अग्नि, वायु, जल और ईथर अलग–अलग होकर अपनी–अपनी जगह विलीन हो जाते हैं। सूक्ष्म शरीर में चार चीजें शामिल हैं। मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार। मन में ख़्वाहिशात पैदा होती है, चित्त उन पर मनन करता है, बुद्धि निर्णय करती है और अहंकार यानी खुदी उस ख़्वाहिश को Practical shape (व्यवहारिक रूप) देती है।

आत्मा का शरीर इन दोनों से न्यारा है। उसका कोई विभाजन नहीं हैं। वह ईश्वरीय है। न कभी पैदा होता है, न मरता है। लेकिन स्थूल और सूक्ष्म शरीर को हरकत देने वाली शक्ति आत्मा ही है। आत्मा की ग़ैर मौजूदगी में स्थूल शरीर निर्जीव हो जाता है, यानी मर जाता है। पहले बच्चे का स्थूल शरीर बनता है, फिर मन का शरीर बनता है, और जब पैदा होता है, तब आत्मा उसमें आती है।

तीनों तरह के जिस्मों की ग़िज़ायें भी अलग–अलग हैं। स्थूल शरीर की गिज़ा भी स्थूल है। अन्न, पानी, गर्मी और हवा से ये पलता है। इनमें से अगर एक चीज भी न मिले तो यह कायम नहीं रहता है। अगर खाना न मिले तो कुछ दिन जिन्दा रहेगा मगर बाद में भूख से मर जायेगा। पानी पीकर भी कुछ ही दिन जिन्दा रहेगा। हवा के बिना कुछ मिनटों में ही मर जायेगा। और अगर गर्मी या हरारत न हो तो भी जिस्म ठंडा पड़कर मौत हो जायेगी। इसलिए जिस्म खाक़ी यानी स्थूल शरीर को कायम रखने के लिए बराबर खुराक मिलती रहनी चाहिए। अगर अच्छी खुराक व अच्छी आबोहवा मिलेगी तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। तन्दुरुस्ती अच्छी रहने से दुनियाँ का कामकाज अच्छी तरह से कर सकेगा। कमजोर और बीमार जिस्म क्या अपने लिए करेगा और क्या दूसरों के लिए?

जिस तरह अच्छी खुराक के बिना स्थूल शरीर बिमार और कमजोर हो जाता है

उसी तरह मन के शरीर को तन्दुरुस्त रखने के लिए अच्छे विचार जरूरी हैं। अच्छे विचार अच्छे आदमियों की सोहबत से मिलते हैं। बुरी सोहबत से बुरे विचार उठते हैं, मन मलिन होता है, चित्त कुंठित हो जाता है, ठीक से मनन नहीं कर पाता और बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। उचित अनुचित कुछ नहीं सूझता और इंसान की गिरावट होती जाती है। आगे की तरक्की नहीं होती। दुनियाँदारों की सोहबत दुनियाँ तक ही सीमित रखती है। मगर संतों और महापुरुषों की सोहबत से मन शुद्ध होता है, चित्त एकाग्र होने लगता है। जो मनन करता है वह एकाग्रता (one pointed attention) से करता है, बुद्धि विकसित होने लगती है और इंसान आगे की तरफ बढ़ने लगता है। Will power यानी इच्छाशक्ति या मनोबल मजबूत होने लगती है। जिस काम को करता है लगन के साथ करता है और अपनी मजबूत इच्छाशक्ति से उसमें कामयाबी हासिल करता है। पढ़ने में जो लोग अच्छे नम्बर लाते हैं, फर्स्ट आते हैं उनकी कामयाबी का यही राज है। बिना खुदी के, बिना इच्छाशक्ति के, दुनियाँ में कामयाबी हासिल करना नामुमकिन है।

लड़कियाँ बचपन में गुड़ियों से खेलती हैं। उन्हें उसमें बड़ा आनन्द आता है। लेकिन जो उसी आनन्द में लगी रहीं, पढ़ने लिखने में ध्यान न दिया वे वहीं तक तरक्की कर पाती हैं, ज्यादातर गवार रह जाती हैं। जो पढ़ती लिखती हैं वे उनसे ज्यादा तरक्की करती हैं, अच्छी गृहस्थिनें (गृहणियाँ) बनती हैं, खुद भी खुश रहती हैं और दूसरों को भी अपने व्यवहार से खुश रखती हैं। जो पढ़ने लिखने से ज्यादा उन्नति करती हैं वे और ज्यादा खुशी हासिल करती हैं। अगर तुम एम.ए. या पीएच.डी करना चाहती हो तो मेहनत करो और अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत बनाओ। ईश्वर पर भरोसा रखो।

जितनी भी दुनियाँवी खुशियाँ और आनन्द हैं वे सब के सब किसी दूसरी चीज पर आधारित (dependent) हैं और मन की ख़्वाहिशात को लिए हुये हैं। अगर कोई मनचाही चीज हासिल हो जाती है तो बड़ी खुशी होती है और अगर नहीं मिलती या कोई ऐसी चीज जिससे तुम्हें खुशी मिलती हो, तुमसे दूर हो जाती है तो दुःख होता है। किसी चीज में भी हमेशा कायम रहने वाली खुशी हासिल नहीं होती क्योंकि एक तो वो चीजें जिन पर वो खुशी आधारित (dependent) है, खुद हमेशा रहने वाली नहीं हैं। दूसरे, मन की हमेशा एक सी स्थिति नहीं रहती। जिस चीज से एक क्षण उसे खुशी मिलती है, उसी चीज से दूसरे क्षण उसे नफरत हो जाती है, दुःख

होने लगता है। मिठाई खाने में बड़ी अच्छी लगती है बीमार हो जाते हैं तो वही मिठाई जहर मालूम होने लगती है। लड़का पैदा हुआ, बड़ी खुशी हुई। पागल हो गया या मर गया, बड़ा दु:ख हुआ।

असली आनन्द आत्मा में है। जिस बाहरी चीज पर उसका अक्स (प्रतिबिम्ब) पड़ता है मन और इन्द्रियाँ उसी में आनन्द लेने लगती हैं। लेकिन आत्मा पर जन्म जन्मान्तर से भले–बुरे संस्कारों के गिलाफ चढ़े हुये हैं, वह दबी हुई है। उसे उभारो। इसके लिए आत्मा को ग़िज़ा की ज़रूरत है। आत्मा पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द और पूर्ण सत्य है। धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने से, संतों के सत्संग से और उनके उपदेशों पर अमल करने से आत्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। सच बोलने, अच्छा काम करने, अच्छे विचार रखने से आत्मा को ग़िज़ा मिलती है। दान करना, दया करना, किसी का दिल न दुखाना, इन सब बातों से आत्मा को बल मिलता है। आत्मज्ञान की प्राप्ति ही ईश्वर की प्राप्ति है। वही इन्सान की जिन्दगी का लक्ष्य (goal) है इसलिए जब तक उसकी प्राप्ति न हो, बराबर आगे बढ़ते रहो।

ईश्वर तुम्हारे अन्दर है। उसे प्रेम से बुलाओ। वह जरूर आयेगा।

ध्यान क्या है

ध्यान यह नहीं कि तुम सुबह, शाम, तीस मिनट आँखें मूंदकर बैठ गए और फिर वापस अपनी सामान्य बेहोशी की हालत में आकर अपने कामों में लग गए। यह नितांत मुखर्तापूर्ण है।

ध्यान का एकमात्र कार्य तम्हें हर वक्त होश में रहने की कला सिखाना है। काम करते हुए, चलते हुए, बैठे हुए, खाना खाते हुए; हर पल होशपूर्ण।

तभी एक दिन वो घड़ी आएगी जब तुम अपने को अपने शरीर से अलग पाओगें; और जिस दिन ऐसा घटित हुआ, उसी दिन तुम्हारा जन्म सफल हुआ।

परमसंत डा. श्रीकृष्ण लालाजी महाराज के अनमोल वचन

- जब तक परमात्मा की याद बनी रहे उतनी देर का समय सार्थक, बाकी निरर्थक है।

***

- सब सांसारिक वस्तुओं का जो जाहिरा (दिखावे का) सहारा है, छोड़कर उसी मालिक का सहारा लो। उसी का असली सहारा है।

***

- सब चीज़ों का देने वाला वही है, लेकिन बाहरी रूप दूसरा है जो धोखा है। जितना तुम दिल से उसके समीप होते जाओगे, उतना ही लम्बा चौड़ा रास्ता मिनटों में तय होता जायेगा।

***

- संत की सेवा में जब भी जाओ, साफ दिल से जाओ। जो अन्दर हो वही बाहर हो- दोहरापन (hypocrisy) न हो। संत की सोहबत से इखलाक (आचरण) सुधरता है- (character formation) होता है। इन्द्रियों, मन और बुद्धि पर क़ाबू (control) होता है। अभी तक ये तुम्हारे ऊपर क़ाबू किये हुये हैं, फिर तुम इनके ऊपर क़ाबू करोगे, इनके मालिक बनोगे। और इस तरह जब आत्मा मन के फंदे से न्यारी हो जायेगी, तब ईश्वर का दर्शन होगा।

***

- खाना सामने रखा है- अचानक कोई भूखा आ गया। खुद न खाकर उसे दे दो। देखोगे कि हमें खाने में उतना आनन्द नहीं मिलता जितना दे देने में।

***

- **प्रश्नः- परमात्मा किससे पैदा हुआ?**
  उत्तरः- जो चीज़ दो चीज़ों से मिलकर पैदा होती है वह जन्म लेती है और मरती है और तबदील होती रहती है। लेकिन जो मुफ़रत यानी एक है,

न वो पैदा होती है और न वो मरती है। दुनियाँ में परमात्मा ही एक ऐसी चीज़ है जो 'एक' है। न कभी पैदा होता है न कभी मरता है। वह हमेशा से मौजूद है और हमेशा क़ायम रहेगा। उसके लिए यह सवाल पैदा नहीं होता कि वह किससे पैदा हुआ।

***

- **प्रश्नः- परमात्मा ने दुनियाँ को क्यों पैदा किया?**

उत्तरः- इसको संतों ने मुख्तलिक (भिन्न-भिन्न) तरीकों से समझाया है लेकिन वह तसल्लीबख्श (संतोषजनक) नहीं है, उसमें कोई न कोई एतराज (आपत्ति) निकालता है। एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भी यही सवाल किया गया था। इसका जवाब उन्होंने इस प्रकार दिया ''परमात्मा की नज़दीकी हासिल करो, उससे मिलकर एक हो जाओ। तभी मज़मून को अच्छी तरह से समझ सकोगे।'' और बात भी ऐसी ही है। परमात्मा के विषय में बातचीत सिर्फ आत्मा ही अनुभव करती है। बुद्धि उसको नहीं समझ सकती। दुनियाँदारों की आत्मा के ऊपर इन्द्रिय, मन, बुद्धि के पर्दे पड़े हुये हैं। इसीलिये वे परमात्मा के भेद को नहीं समझ सकते, जब तक इन पर्दों को अपने ऊपर से न हटा दें। पूर्ण रूप से तो उसी वक्त आपको समझ में आयेगा जब आप इन्द्रिय, मन व बुद्धि की गुलामी से आज़ाद होंगे लेकिन फिर भी समझाने की ग़रज से कुछ न कुछ कहा जाता है। समुद्र अपनी हालत पर क़ायम है। उसमें चाँद, सूरज, हवा के असर से लाखों करोड़ों ही बुलबुले पैदा होते हैं और हजारों नजारे (दृश्य) दीखते हैं लेकिन इनके शांत हो जाने पर न कहीं बुलबुले हैं न कहीं नजारे हैं। समुद्र ज्यों का त्यों है। वह हमेशा से क़ायम है, क़ायम रहेगा। उसमें न कहीं प्रलय है और न उत्पत्ति। जो बुलबुलों पर निगाह रखते हैं वे प्रलय और उत्पत्ति दोनों अनुभव करते हैं। और जो समुद्र पर निगाह रखते हैं उनको ये दोनों चीज़ें वहम दिखाई देती हैं। सिर्फ एक शक्ति काम कर रही है, अपनी ख़्वाहिश (इच्छायें) और संस्कारों के वश जीव उनमें मुख्तलिख (विभिन्न) नज़ारे

(दृश्य) देखता है। जब तक संस्कार बाकी हैं नज़ारे मौजूद हैं और जब ये खत्म हो जाते हैं नज़ारे भी ग़ायब हो जाते हैं।

***

- नामी से नाम बड़ा है। जहाँ उसका नाम लिया और वह तुम्हारे पास में आया।

''समझो हमें वहीं पर, दिल है जहाँ हमारा।''

***

- शुद्ध मन से यह मतलब है कि उसको ईश्वर से लगाव हो और तलाश करके उसको सद्गुरु मिल गया हो और उससे प्रीति हो गई हो। शुद्ध बुद्धि से यह मतलब है कि बुद्धि में दुनियाँ की नाश्वरता को देखकर सच्चाई यानी हमेशा रहने वाली चीज़ की तलाश हो और दुनियाँ से उपरामता हो गई हो। जब तक ये दोनो चीज़ें न होंगी, इस दुनियाँ के प्रपंच से छूटना नामुमकिन (असम्भव) है।

***

- तन का सुख, इन्द्रिय सुख, मन का सुख और बुद्धि का सुख- सबको समता में लाकर इष्ट के अर्पण कर दें, अपने आपको पूर्ण रूप से उसके हवाले कर दें। इसके बाद कुछ करना धरना नहीं रहता। एक दीन भाव ही उसे निकाल ले जायेगा।

***

- दुनियाँ में हर शख़्स अपने ख़्याल में मस्त है, कोई रुपये में, कोई स्त्री में, कोई औलाद में और कोई मान बढ़ाई में और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देता है। जब तक ख़्वाहिश के मुताबिक गुरु बातचीत करता है वह उनका सब कुछ है, जब गुरु मन के खिलाफ कोई बात कहता है तब वे विमुख हो जाते हैं और गुरु में सौ नुक़्स निकाल देते हैं। ऐसे लोगों की सोहबत से बचो।

प्रवचन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब

मन-वचन-कर्म से किया गया पश्चात्ताप व श्रद्धा से की गई प्रार्थना का सुपरिणाम

विश्व के महान धर्मों- सनातन हिन्दू धर्म, वैदिक आर्य, जैन, बौद्ध, सिख, राधास्वामी तथा ब्रह्म समाज आदि- सभी के दर्शन शास्त्रों ने भारतीय संस्कृति का आधार और जीवन-सिद्धांत समान भाव से एक ही माना है। इनकी आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार आत्मा (जीव) का परमात्मा (ब्रह्म) की सत्ता में विलीन हो जाना अथवा मोक्ष ही मानव-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि या अन्तिम गति है, और जब तक यह गति प्राप्त नहीं हो जाती तब तक जीवात्मा कर्म और उनके फलस्वरूप भोगों के चक्कर में जन्म-जन्मान्तर तक भटकती रहती है। इसी को 'कर्म-सिद्धान्त' की संज्ञा दी गई है।

साधक के जीवन में भी कर्म संस्कारों, विचारों का ताँता निरन्तर चलता ही रहता है। प्रश्न उसके सामने यह आता है कि इनसे छुटकारा कैसे मिले। आज हमारा जो वर्तमान है, एवं इससे पहले जो हमारे जीवन थे, हमने उनमें अगणित ग़लतियाँ की हैं, लाखों बुरे-भले कर्म किये हैं और अब भी जाने-अनजाने करते जा रहे हैं। वही अच्छा साधक है जिसके ध्यान में किसी भी प्रकार के विचार न उठें परन्तु वह विवश होता है क्योंकि विचारों का ताँता तो लगा ही रहता है। कई बार तो अधिक विचार आने के कारण वह इतना दुखी और अपने आप से इतना निराश हो जाता है कि वह साधना ही छोड़ देता है, पर ऐसा करना नहीं चाहिए। दुखदायी विचारों से मुक्त होने के लिए दो मुख्य साधन हैं:- (1) प्रायश्चित (2) प्रार्थना

पश्चात्ताप और प्रायश्चित का लाभ

अपनी बुराईयों को याद करके सत्यता से पश्चात्ताप करना चाहिए एवं दृढ़ संकल्प लेना चाहिए कि भविष्य में उस बुराई की पुनरावृत्ति नहीं करेंगे परन्तु कर्म करते समय इन्द्रियों के वशीभूत मन कमज़ोर हो जाता है। मन का स्वभाव बन जाता है कि वह

बार-बार वही ग़लतियाँ करता रहता है।

ऐसी स्थिति में बार-बार प्रभु से क्षमा एवं कृपा माँगनी चाहिए। यदि आराधना में आप बैठें तो उस त्रुटि को अपने इष्टदेव के सामने रखकर उससे मुक्ति के लिए शक्ति की प्रार्थना करनी चाहिए। परन्तु मन यहाँ धोखा देता है। कई बार निराश होकर लोगों ने जीवन दे दिया है, आत्महत्या कर ली है। यदि एक बार प्रभु या अपने गुरु के चरणों में प्रण कर लेने के उपरान्त वो ग़लती दूसरी बार होती है तो कभी-कभी कोई भावुक साधक अपने प्राण तक दे देता है।

सर्वप्रथम पश्चात्ताप करिए, दीनता से रोकर। महापुरुषों ने लिखा है कि एकान्त में बैठकर खूब रोइये, रो-रोकर अपनी ग़लतियों पर पश्चात्ताप करिए, अपने आपको आँसुओं से भिगो डालिए और इसी आँसुओं की धार से पापों को धो डालिए। इससे वर्तमान यानी चेतन अवस्था में जो संस्कार पड़े हैं उन्हें भी ढीला करने में मदद मिलती है। पर उसके लिए समय लगता है। साधन उसके लिए भी यही है।

पश्चात्ताप करते चले जायें और ईश्वर से प्रेम करें। ऐसी दशा में मन में एक शून्यता (vacuum) सी आ जाती है। उस शून्यता को भरने को कुछ चाहिए। यदि मन पश्चात्ताप से खाली होने के साथ ही ईश्वर प्रेम से उसे नहीं भरता, परमात्मा से अनुराग नहीं करता, तो उस शून्य में अन्य कुछ अवांछित भी समा जाता है। संक्षेप में परमात्मा से प्रेम करें - अनुराग द्वारा और संसार से वैराग करें। पश्चात्ताप करते हुए अनुराग के लिए हर समय प्रार्थना करते रहना चाहिए। प्रार्थना और आराधना में अपार शक्ति है। इनसे strong will power (दृढ़ संकल्प) का सामर्थ्य भी प्राप्त होता है।

पुराने संस्कारों या वृत्तियों से निवृत्त होना कोई साधारण बात नहीं है। इसके लिए बार-बार पश्चात्ताप करना ही होगा। इसके साथ-साथ हमारा जीवन शुद्ध और पवित्र होता जाना चाहिए। जो पिछले बुरे कर्म अथवा पाप किये हैं, उनके विचार भी साधना अवस्था में अवश्य आयेंगे। इसलिए कबीर साहब ने फरमाया है कि संसार में रहकर सर्वप्रथम राग और द्वेष दोनों से बचने का प्रयास करें। परन्तु यह है बड़ा कठिन।

दूसरे दार्शनिक जो साधन बताते हैं वो यह है कि जागरूक होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। किसी की प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। प्रतिक्रिया शून्य अवस्था में

भी नहीं होनी चाहिए। हम आँखों से देखकर, कानों से सुनकर, जुबान से, खाने या बोलने में तुरन्त प्रतिक्रिया करते हैं, विचारों के भी तुरन्त प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अन्तर में विचारों का ताँता सा लग जाता है। मनुष्य उन विचारों को छोड़ न पाने से पागल सा हो जाता है। जितने अधिक विचार उठेंगे, संस्कार उतने अधिक दृढ़ होंगे। इसलिए मौन को अपनाये बिना संस्कार कभी समाप्त नहीं हो सकते। विचार शून्य मौन में रहने का प्रयास- अभ्यास करना चाहिए।

प्रार्थना का सुपरिणाम

प्रार्थना में बड़ा बल है। जो लोग रामेश्वरम गये हैं वो जानते हैं कि भगवान राम ने विशाल सागर के ऊपर पत्थरों से पुल बनवा दिया था, जो पूर्णत: असम्भव बात है। परन्तु उन्होंने पुल बनाने के लिए स्वयं पूजा–प्रार्थना करके भी यह आदर्श दिखाया कि प्रार्थना के बल पर हम कितना कुछ कर सकते हैं। उस समय उन्होंने भगवान के रूप में नहीं अपितु राम के रूप में प्रार्थना की और सागर पर पत्थरों का पुल बनवा दिया।

ऐसे ही महाराजा रणजीत सिंह फौज लेकर काबुल पर विजय प्राप्त करने जा रहे हैं, अटक के पास एक सागर समान गहरा दरिया आ जाता है। पानी बहुत गहरा तथा प्रवाह भी बहुत तेज है। उस समय पुल नहीं होते थे। महाराजा रणजीत सिंह की ईश्वर में दृढ़ आस्था थी। उन्होंने पहले पूजा पाठ किया तत्पश्चात्त प्रार्थना की है और फिर अपने घोड़े पर सवार होकर अटक दरिया में कूद गये और पार पहुँच गये। पीछे–पीछे फौज भी उनका अनुसरण करते हुए दरिया पार कर गई और उन्होंने काबुल पर विजय प्राप्त की।

हाँ, प्रार्थना से पहले अपने आराध्य या इष्टदेव में अटल विश्वास का होना अनिवार्य है क्योंकि ईश्वर में यदि पूर्ण विश्वास न हो तो प्रार्थना कैसी? भक्त प्रहलाद का विश्वास देखिए। केवल एक बार थोड़ा सा घबराये हैं जब उन्हें अग्नि स्तम्भ का आलिंगन करने को कहा गया है। उस समय भी प्रार्थना की है तो प्रभु चींटी के रूप में प्रकट हुए। उससे प्रेरणा मिली। दौड़े–दौड़े गये हैं और अग्नि स्तम्भ का अलिंगन कर लिया। प्रार्थना की सफलता के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. ईश्वर में पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि वो हमारे दु:खों की निवृत्ति अवश्य कर देंगे।
2. ऐसा अनुमान करना चाहिए जिससे भी आप प्रार्थना कर रहे हैं, आप उस इष्टदेव या गुरु के चरणों में बैठे हैं और वो आप की प्रार्थना सुन रहे हैं।
3. प्रार्थना हृदय की गहराई से निकलनी चाहिए।
4. प्रार्थना उचित होनी चाहिए। ऐसी नहीं कि सारा संसार मुझे मिल जाये, या जैसे मैं चाहता हूँ परमात्मा सारे काम वैसे ही करवा दें। क्या परमात्मा हमारा आज्ञाकारी नौकर है?
5. प्रार्थना करते हुए यह देखें कि हमारी आकांशा पूर्ति से कहीं दूसरे को तो दु:ख नहीं पहुँचेगा। तत्पश्चात्त ऐसी इच्छा प्राप्ति से आपके साथ-साथ औरों को भी सुख मिले उसके लिए ही प्रार्थना करें।
6. सर्वोत्तम प्रार्थना यह है ''हे प्रभु! संसार में सबका भला हो।''

संत कभी भी अपने लिए कुछ नहीं माँगता। सच्चा जिज्ञासु भी कुछ नहीं माँगता है, उसकी यही सच्ची भावना रहती है- ''मोको कछु न चहिए राम''। गुरु अर्जुनदेव जी के शब्दों में भी ऐसे ही उद्‌गार होते हैं कि- ''राज न चाहूँ, मन प्रीत कमला रे''। अर्थात् सच्चे भक्त को राजपाठ नहीं चाहिए। यहाँ तक कि वो तो मुक्ति को भी तुच्छ समझता है। वो कहता है ''मुझे केवल अपने चरण कमल की प्रीत प्रदान करें।'' ऐसे भाव सिर्फ प्रार्थना के समय ही नहीं बल्कि सारा दिन हमारी दिनचर्या का एक अंग ही बना रहना चाहिए। जिससे हमारे कर्म भी इस प्रार्थना के अनुरूप होते रहें।

ऐसी प्रार्थना से मन निर्मल हो जाता है और जब हम सबके भले के लिए प्रार्थना करते हैं तो भीतर से स्वार्थ का जो संस्कार है वह समाप्त हो जाता है। धीरे-धीरे लोभ, मोह, अहंकार आदि के संस्कार भी समाप्त हो जाते हैं एवं सच्ची दीनता व सच्ची सरलता आती जाती है।

दीनता एवं सरलता भी ऐसे गुण हैं जो परमात्मा के चरणों की ओर ले जाते हैं। शिशु की तरह सरलता होनी चाहिए, जिससे किसी के प्रति राग-द्वेष न हो। बड़े होते ही सबके मन में राग-द्वेष पैदा हो जाते हैं। इससे निवृत्ति तब ही

सम्भव है जब मनुष्य को प्रार्थना द्वारा सच्चे प्रेम की प्राप्ति हो जाये।

सच्चा प्रेम क्या है? प्रेम में पवित्रता है, उदारता है, त्याग है। प्रेम में एकता है, प्रेम में विभाजन नहीं होता। परमात्मा का दूसरा नाम ही प्रेम है। हम परमात्मा से प्रेम करते हैं, और भाईयों से या संसार के अन्य लोगों से द्वेष करते हैं तो यह कोई प्रेम साधना नहीं है। प्रेम में तो सब अवगुण समाप्त होकर एकमात्र परमात्मा ही रह जाता है। वहाँ न मन रहता है, न बुद्धि की चतुराई रहती है। फ़क़त तू ही तू है। आगे चलकर यह भी खत्म हो जाता है। प्रेमी केवल कभी-कभी दूसरों को समझाने हेतु कुछ शब्द बोल देता है, अन्यथा इस अवस्था में उसका मन, इन्द्रियाँ, वृत्तियाँ सब शान्त हो जाते हैं। केवल प्रकाशमान आत्मा ही रह जाती है।

इस शान्त भाव की सुन्दर कल्पना को साकार रूप में दिखाने के लिए कवियों, चित्रकारों, मूर्तिकारों ने भगवान शंकर तथा अन्य देवी-देवता अथवा गौतम बुद्ध के भव्य स्वरूप को कैसी शान्त एवं गम्भीर प्रसन्न मुद्रा में बैठी मूर्तियों या चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया है। जब प्रेम में डूबे साधक में किसी प्रकार की वेदना-संवेदना या अन्य कोई भाव-तरंग नहीं रहती है तो शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार, आत्मा सब परमात्मा में लय हो जाते हैं। शरीर का बोझ, मन का द्वन्द, बुद्धि की चतुराई तथा आत्मा की पृथकता, सभी समाप्त हो जाते हैं।

ऐसी अवस्था में कोई अवरोध अथवा कोई प्रयास नहीं होता और तब सच्चा योग होता है। सच्ची मौन साधना यहीं से प्रारम्भ होती है। इस प्रेमाग्नि में सारे संस्कार स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। इसी स्थिति को लाने के लिए सफल सहायक होते हैं ये दो उपाय- प्रायश्चित्त और प्रार्थना।

गुरु महाराज आपको शक्ति दें।

मन का झुकना

मन का झुकना बहुत जरूरी है, केवल सर झुकाने से परमात्मा नहीं मिलते!
ताकत अपने लफ़्ज़ों में डालो, आवाज में नहीं,
क्योंकि फसल बारिश से उगती है, बाढ़ से नहीं।

प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र

हुसेन मन्सूर

तपस्वी हुसेन मंसूर को ईश्वर का मार्ग अनुसरण करने के कारण अनेक तकलीफें सहनी पड़ी थीं, उन सबों का उन्होंने बड़ी दृढ़ता से सामना किया था। उन तकलीफों को सहने ही में उन्होंने प्राण भी त्याग दिये थे। उनके जीवन की घटनायें बड़ी अनोखी हैं और उनके काम भी बहुत विचित्र हुआ करते थे। वे एक भक्त और मस्त व्यक्ति थे। वे प्रभु की जुदाई से सदा व्याकुल रहते थे। सभी उन्हें पागल कहा करते। किन्तु वास्तव में वे थे सच्चे प्रभु-भक्त। अपने जीवन में उन्होंने कठोर तप और साधनायें की थीं। वे पूर्ण बैरागी, उत्तम वक्ता और तत्ववेत्ता थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी। भाषा पर उनका जितना अधिकार था, उतना किसी और पर न था। वे अगाध पण्डित थे।

उनका सारा जीवन दु:ख और तकलीफों से भरा था। अचरज की बात तो यह है कि उस समय के धर्मपरायण लोग भी मंसूर की निन्दा किया करते थे। कोई इने-गिने आदमी ही उनको समझ सकते थे। अब्दुल्ला खलीक सब्ली और अबदुल्ला कासिम नसिराबादी मंसूर की बहुत इज़्ज़त करते थे, पर दूसरे तो उन्हें खुलेआम जादूगर और काफिर कहते। लोगों ने तरह-तरह के दोष उनके मथ्थे मढ़ रखे थे। उनके उपदेश वचनों के मर्मों को न समझ सकने के कारण उन पर हथियार से वार किया गया और अन्त में बहुत सी तकलीफें देकर उनकी हत्या कर दी गई। उनका सदा का महामंत्र था 'अनहलक'(अहं ब्रह्मस्मि) और वही उनकी हत्या का कारण हुआ।

उनके जन्म स्थान के सम्बन्ध में मूलग्रन्थ में कोई उल्लेख नहीं है पर अनुमान है कि वे बगदाद के रहने वाले थे। पहले वो तत्तर में अब्दुल्ला तस्वीर के साथ रहे। पहली विदेश यात्रा उन्होंने सोलह वर्ष की उम्र में की थी। तत्तर से वे बसरा आये और वहाँ से अन्यत्र चले गये। मक्का निवासी हज़रत उस्मान के पुत्र उम्मर से उनकी दोस्ती हुई। डेढ़ वर्ष तक वे उम्मर के साथ रहे। अबु इयाकुबोल ने अपनी बेटी की शादी उनसे की। उम्मर की संगति से उनका मन सुमार्ग में लगा और तब वे महर्षि जुन्नेद के साथ बगदाद चले गये। मन्सूर ने जुन्नेद के साथ थोड़ा समय जंगल के एकांत में बिताया। बाद में मक्का आकर उन्होंने वहाँ के सूफियों के साथ ज्ञान का विनिमय

किया। आखीर में बहुत से सूफियों के साथ फिर बगदाद आकर उन्होंने महर्षि जुन्नेद के पास जाकर बहुत से सवाल पूछे, जिनके जवाब में उन्होंने कहा– ''मन्सूर तुझे जल्दी ही सूली पर चढ़ना होगा'', इस पर हुसेन मन्सूर ने कहा– ''जिस दिन ऐसा होगा उस दिन आपको भी फकीरी बाना छोड़कर दुनियावी आदमियों के जैसे कपड़े पहनने होंगे। जुन्नेद ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

बहुत से अगुआ लोगों ने मिलकर खलीफा को अर्जी भेजी कि हुसेन मन्सूर को प्राण–दण्ड दिया जाना चाहिए। खलीफा ने इस बारे में महर्षि जुन्नेद की राय माँगी। जुन्नेद ने खलीफा को लिखा– ''बाहरी नज़र से तो मन्सूर को मौत की सजा देना जरूरी मालूम होता है, भीतर का हाल तो वह प्रभु जाने।''

हुसेन मन्सूर अपनी बात का जवाब महर्षि जुन्नेद से न पाकर, निराश होकर उनकी आज्ञा लिये बिना ही अपनी स्त्री के साथ तस्तर चले गये। वहाँ वे एक वर्ष रहे। लोगों के मन पर उनके चरित्र का बहुत असर पड़ा। अपनी चर्चा में महात्मा मन्सूर दुनियाँ और दुनियावी लोगों को ऊँचा न बताकर नीचा बताते जिससे थोड़े समय में लोगों की उनके प्रति अरुचि सी हो गई। झूठी इज़्ज़त के भूखे लोग उनसे द्वेष करने लगे। उस्मान के पुत्र उम्मर ने भी मन्सूर के खिलाफ ख़त लिखे, जिससे खुरासान वालों की नज़र में भी मन्सूर गिरने लगे। दुनियावी लोगों से मन्सूर को वैराग्य तो था ही, ऐसी बातों से वह वैराग्य और भी दृढ़ हो गया। अब उन्होंने फकीरी बाना छोड़कर साधारण आदमियों के से कपड़े पहन लिये। उन्हीं के मुताबिक उन्होंने अपना रहन सहन भी कर लिया। अपने सच्चे रूप को छिपाकर दुनियावी व्यक्ति की भाँति रहने लगे।

खुरासान, मदरण्णहर, निमरोज और किर्माण में रहकर मन्सूर ने पाँच वर्ष एक तरह से फिजूल गंवा दिये। उसके बाद इरान जाकर उन्होंने कई अच्छे–अच्छे ग्रन्थों की रचना की। आह्वाज के रहने वालों को उपदेश देने का काम हाथों में लेकर फिर फकीरी वेष धारण कर लिया। बहुत से फकीरों के साथ वे वहाँ से मक्का गये। मक्का में याकूब नहर नाम के एक आदमी ने मन्सूर को जादूगर मशहूर करके उनकी निन्दा करनी शुरु कर दी।

मक्का से वे बसरा गये, वहाँ वे एक वर्ष रहकर आह्वाज लौट आये। अब उनका ध्यान दूसरे मुल्कों में जाकर लागों को उपदेश देने की ओर आकर्षित हुआ। वे हिन्दुस्तान भी आये और भी दूसरे मुल्कों में उन्होंने भ्रमण किया। भ्रमण से लौटकर वे दो वर्ष तक फिर मक्का में रहे। अब उनके उपदेशों में ऐसी बातें हुआ करती थीं

जिनके असली मतलब को न समझ सकने के कारण उनका बहुत से शहरों में अपमान हुआ। वे मारपीट कर बाहर निकाल दिये गये।

एक बार उनके साथ मक्का की यात्रा में चार हजार का काफिला था। काबा के सामने जाकर वे नंगे बदन सबेरे ही से खड़े हो गये। गर्मी की तेज घूप के कारण दिन भर उनका शरीर जलता रहा, पसीना चूता रहा और उस पसीने की धारा से नीचे के पत्थर गीले हो गये, पर वे अपनी प्रार्थना में अटल रहे। रोज रोटी का एक टुकड़ा उनके पास रख दिया जाता पर वे उसमें से एक कौर खाकर बाकी छोड़ देते। उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि ''हे प्रभो! यदि मैं धर्मभ्रष्ट भी हूँ तो इस हालत में भी उद्धार करना।'' इस प्रकार प्रार्थना करने पर उन्होंने आँखें खोलीं तो उन्हें अपने पास बहुत से आदमी प्रार्थना करते दिखाई दिये। उन्होंने फिर प्रार्थना की- ''हे परमात्मा! भावुक अपनी भावना में, जप करने वाला अपने जप में और ज्ञानी अपने ज्ञान में तुम्हें जितना पवित्र मानता है उससे भी कई गुना ज्यादा मैं तुझे पवित्र मानता हूँ। हे प्रभो! मेरे हृदय का भाव तू जानता है। मैं तेरे उपकारों का बखान करने योग्य नहीं, यह भी तुझसे छिपा नहीं। मेरे रोम-रोम में तू व्याप्त है, अपने उपकारों का तू ही वर्णन कर सकता है।''

उनको रोज लगातार साधना करते देखकर किसी ने पूछा- ''आप इतने ऊँचे पहुँच गये हैं फिर भी इतनी तकलीफ क्यों उठाते हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया ''जिस प्रकार मुर्दे को सुख-दुख का अनुभव नहीं होता, उसी प्रकार प्रभु-प्रेमी को भी नहीं होता।''

किसी ने सहनशीलता के बारे में प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया- ''हाथ पैर काटकर शरीर को सूली पर चढ़ाया जाय फिर भी जो चूँ नहीं करे उसी को सहनशील मानना चाहिए। आगे जाकर खुद अपने ऊपर ऐसा ही मौका आ जाने पर मंसूर ने सच्ची सहनशीलता का परिचय दिया था।

मंसूर के अनोखे कामों से उकता कर बहुत से लोग उनके विरोधी बन गये। दूसरी ओर उनके कामों का अनोखापन और भी बढ़ने लगा, उनकी वाणी तेजस्वी हो गई। खलीफा के सामने जब उनकी बात चली तब सभी ने एक मत से उन्हें प्राण दण्ड देने की राय दी। महर्षि मंसूर 'अनहलक' का जप करते थे, इसी से नाराज होकर सबने उनके लिए ऐसी कड़ी सजा की तजबीत की थी। लोगों को उन्होंने जवाब दिया- ''हाँ! वही बन्धु है, उसका महासागर चारों ओर उछल रहा है। उसमें मेरा

'अपनापन' मिलकर एकरस हो गया है। मैं अब उससे कैसे अलग हो सकता हूँ? मैं अपना मंसूरपन छोड़कर प्रभुपन को प्राप्त हुआ हूँ। अब महान पद को छोड़कर फिर छोटा पद क्यों लूँ?''

मुहम्मद दाऊद और एक मुल्ला ने उन पर हमला किया। मारपीट कर वे तो भाग गये और उलटे मंसूर को ही खलीफा के मंत्री ने कैद कर लिया। कैद में भी बहुत से लोग उनसे मिलने जाते और धर्म की बातों पर सवाल करते। बाद में लागों को उनके पास जाने की मनाही कर दी गई। वे एक वर्ष तक कैद में रहे। एक दिन अब्दुल्ला खलीफा अपने साथी के साथ उनके पास गया और उसने कहा- ''अपनी पिछली बातों के लिए माफी माँग लेने पर आपका दुबारा छुटकारा हो सकता है।''

''माफी माँगनी चाहिए उसे जो मुझे माफी माँगने के लिए कहता है।'' मंसूर ने जवाब दिया। यह सुनकर उन दोनों के क्रोध का ठिकाना न रहा और वे मंसूर को मारने-पीटने लगे।

कहते हैं जेल में रहकर उन्होंने कई चमत्कार दिखाये जिससे नाराज होकर खलीफा ने हुक्म दिया कि जब तक वह 'अनहलक' बोलता रहे उसे लकड़ियों से पीटा जाय और फिर उसका वध कर दिया जाय।

खलीफा की आज्ञा का पालन हुआ। लकड़ी की हर मार के साथ मंसूर के मुख से वही 'अनहलक' शब्द निकलता था। आखिर जल्लाद उन्हें सूली पर चढ़ाने ले गये। उन्हें देखने के लिए हजारों की भीड़ इकठ्ठी हो गई। मौत को नजदीक देखकर मंसूर और भी जोर से 'हक, हक, हक, अनहलक' कहने लगे।

मौत जब सर पर सवार थी तब भी उनसे जो प्रश्न पूछे गये उनका उत्तर उन्होंने बहुत ही शान्ति के साथ दिया। सूली के पास जाकर उन्होंने उसका सहज भाव से चुम्बन किया। सूली की सीढ़ी पर पाँव रखकर उन्होंने कहा- ''वीर पुरुषों के लिए सूली स्वर्ग की सीढ़ी है'' पश्चिम की ओर मुँह करके उन्होंने ऊँचे हाथ उठाकर प्रार्थना की। कुछ दुष्टों ने उन पर पत्थर फेंके तब भी वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। पहले उनके हाथ काट डाले गये, वे हँसकर बोले- ''मेरे इन बाहरी हाथों को काटना आसान है, पर मेरी आत्मा के उन हाथों को जो स्वर्ग के शिखर पर से गौरव का मुकुट उतारने के लिए आतुर हो रहे हैं काटने में कौन समर्थ है?'' पैर काटे जाने पर उन्होंने कहा- ''इस मृत्युलोक में घूमने वाले इन पैरों को तुम काट सके हो, परमधाम में घूमने की इच्छा रखने वाले मेरे पैरों को काट सको तो जानूँ।''

अपने ही खून से अपने दोनों हाथों को लाल करके उन्होंने कहा था कि ''यह एक प्रभु प्रेमी की वज़ू है''। जब उनकी दोनों आँखे निकाली गईं तो लोगों में हाहाकार मच गया। जल्लाद जब जीभ काटने लगा तो उन्होंने कहा- ''जरा ठहर जाओ मैं कुछ कहना चाहता हूँ। तब उन्होंने कहा- ''जिन्होंने मुझे इतनी पीड़ा पहुँचाई है, उन्हें तू सुख से वंचित न रखना, उन पर नाराज न होना। उन्होंने मेरे हाथ पैर काटकर मेरी मंजिल को पास कर दिया है। अभी ये मेरा सर काट देंगे तो मैं सूली पर से तेरा दर्शन कर सकूँगा।'' प्राण निकलने से पहले उन्होंने कुरान की दो आयतें पढ़ी। इस धरती पर उनकी वही आखिरी आवाज थी। इस धरती पर विश्वास व वीरता का अलौकिक आदर्श दिखाकर मंसूर ने हँसते-हँसते मौत को गले लगा लिया। उनके शव का अग्निदाह किया गया।

उपदेश वचन

1. जिनकी सदा ईश्वर की ओर दृष्टि है, और संसार से जो विरक्त हैं, वही ऋषि हैं।
2. जो लोगों के अत्याचारों से व्यथित नहीं होते वे ही महापुरुष हैं।

जीने की कला

तुम्हें ऐसे जीना होगा कि मृत्यु आए उससे पहले तुम्हारे पास कुछ हो जो मृत्यु छीन न सके-ध्यान हो, प्रार्थना हो, प्रभु की थोड़ी अनुभूति हो, समाधि का थोड़ा अनुभव हो, थोड़ी आत्मा की सुवास उठे! क्योंकि देह ही मरती है, आत्मा नहीं मरती। दीया ही टूटता है, ज्योति तो उड़ जाती है फिर नए दियों की तलाश में। पिंजड़ा ही जलता है, पक्षी तो उड़ जाता है।

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद

रजिस्टर्ड ऑफिस: 9–10 रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना	अरविन्द मोहन	अनुराग चन्द्र
सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष	*मंत्री*	*कोषाध्यक्ष*

घोषणा: संस्था की कार्यकारिणी समिति–(2019–2020)

मैं, शक्ति कुमार सक्सेना, पुत्र स्व. श्री कृष्ण सहाय सक्सेना, सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष, रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) संस्था की वर्तमान कार्यकारिणी भंग करता हूँ। वर्ष 2019–2020 के लिए संस्था के विधान की धारा 10(ग) में प्रदत्त अधिकारों के तहत नवीन कार्यकारिणी समिति,पदाधिकारी एवं सदस्यों की निम्नवत् घोषणा करता हूँ, जो विधान की धारा 9(ग) के अनुरूप एक वर्ष हेतु वैध रहेगी:–

क्र.	पद	नाम	पता	व्यवसाय
1.	अध्यक्ष	डा. शक्ति कुमार सक्सेना	एस–ए–36, शास्त्रीनगर, ग़ाज़ियाबाद	डॉक्टर
2.	मंत्री	श्री अरविन्द मोहन	2बी, नीलगिरी–3, सेक्टर–34, नौएडा	सर्विस
3.	कोषाध्यक्ष	श्री अनुराग चन्द्र प्रसाद	बी1–206, अरावली अपार्टमेंट, सेक्टर–34, नौएडा	निजी व्यवसाय
4.	सदस्य	कैप्टन के.सी. खन्ना	आर–11/182, राजनगर, न्यू ग़ाज़ियाबाद	सेवानिवृत्त
5.	सदस्य	श्री उमाकांत प्रसाद	207, संयम प्रतीक, अपार्टमेन्ट, खाजपुरा, पटना	सेवानिवृत्त
6.	सदस्य	डॉ. दिनेश कुमार श्रीवास्तव	छावनी मौ. वार्ड नं.–4 पो.आ.–भभुआ, कैमूर	सेवानिवृत्त

जारी

क्र.	पद	नाम	पता	व्यवसाय
7.	सदस्य	डॉ. मुद्रिका प्रसाद	साकेतपुरी, मुजफ्फ़रपुर, बिहार	सेवानिवृत्त
8.	सदस्य	श्री. आर.पी. शिरोमणी	मूलचन्द मार्किट, शमशाबाद रोड, आगरा	सेवानिवृत्त
9.	सदस्य	श्री प्रियासरन	105-हिमालय टॉवर, अहिंसा रवण्ड-2, इन्द्रापुरम, ग़ाज़ियाबाद	सेवानिवृत्त
10.	सदस्य	श्री अनिल कुमार	6, चेतना समिति, ए.जी. कालोनी, पटना	सर्विस
11.	सदस्य	श्री विष्णु शर्मा	आर-27, नारायणा विहार, गोपालपुरा, जयपुर	सेवानिवृत्त
12.	सदस्य	प्रो. आर.के. सक्सेना	टी3-150 हारमनी अपार्टमेंट, सेक्टर-50, गुरुग्राम	सेवानिवृत्त
13.	सदस्य	प्रो. आदर्श किशोर	5, नेहरू कॉलोनी, गांधी रोड, आर.के पुरी, ग्वालियर-474011	सेवानिवृत्त
14.	सदस्य	श्री कन्हैया पाल	फ्लैट नम्बर 201, एस.के. पुरम रोड न.-21, दानापुर, पटना-801503	सेवानिवृत्त जज

(ह.)

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

अध्यक्ष एवं आचार्य

दिनांक: 6-10-2019

रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड) ग़ाज़ियाबाद

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद

रजिस्टर्ड ऑफिस: 9–10 रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना
सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष

एस. ए. 36, शास्त्री नगर
ग़ाज़ियाबाद

घोषणा

मैं डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना पुत्र स्व. श्री कृष्ण सहाय सक्सेना, सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद, एतद् द्वारा शिक्षक वर्ग, रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद की परिवर्द्धित सूची सर्वसाधारण हेतु निम्न प्रकार से जारी करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव द्वारा जो इज़ाज़तें जारी की जा चुकी हैं वह पूर्ववत् रहेंगी। नए भाईयों, जिनकी नियुक्ति की गई है, उनके नाम व गुरुदेव द्वारा पूर्व में घोषित नाम नीचे प्रकाशित किये जा रहे हैं:–

इज़ाज़त बैत शर्तिया (आचार्य पदवी प्रतिबंधित) क्र. 3 :–

1. श्री उमाकान्त प्रसाद, पटना
2. श्री दिनेश कुमार श्रीवास्तव, भभुआ
3. श्री कृष्ण चन्द्र खन्ना, ग़ाज़ियाबाद

उपरोक्त में से किसी को भी इज़ाज़त देने का अधिकार नहीं होगा।

इज़ाज़त तालीम (शिक्षक) क्र. 2:–

1. डॉ. मुद्रिका प्रसाद, मुजफ्फ़रपुर
2. श्री आर.पी. शिरोमणी, आगरा
3. श्री अशोक प्रधान, नई दिल्ली
4. श्री विष्णु शर्मा, जयपुर
5. श्री भुवनेश्वर नाथ वर्मा, भभुआ
6. श्री महेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, रेवाड़ी
7. डॉ. राजेश चन्द्र वर्मा, आरा
8. श्री पारसमणी ठाकुर, देवघर
9. श्री मोहन सहाय श्रीवास्तव, वाराणसी
10. डॉ. सुधीर कुमार, मोतीहारी
11. प्रो. आदर्श किशोर सक्सेना, ग्वालियर
12. श्री आदर्श कुमार, वाराणसी
13. श्री छैल बिहारी श्रीवास्तव, कानपुर
14. श्री नारायण द्विवेदी, इन्दरगढ़
15. श्री ओ.पी.एम. तिवारी
16. श्री जयशंकर नाथ त्रिपाठी

उपरोक्त में से किसी को भी बैत करने का अधिकार नहीं होगा।

जारी

इज़ाज़त मॉनीटर (सत्संग कराने की) क्र. 1:-

1. श्री हरि शंकर तिवारी, सासाराम
2. श्री जे.सी.पी. सिन्हा, जमशेदपुर
3. श्री हरीश रोहिल्ला, झुंझुंनू
4. श्री जगजीवन पंडित, बरगनिया
5. श्रीमती आभा सिंह, बोकारो
6. श्री विनीत मिश्रा, अलवर
7. श्री बी.सी. महरोत्रा, राँची
8. श्री अवध बिहारी सिन्हा, सासाराम
9. श्री अरविन्द कुमार, वाराणसी
10. श्री राम व्रत सिंह, चकिया
11. श्री महेश प्रसाद वर्मा, सीतामढ़ी
12. श्री रमेश प्रसाद सिन्हा, मुज़फ्फ़रपुर
13. श्री कामेश्वर प्रसाद चौधरी, दरभंगा
14. श्री राजेश कुमार सिंह, मुंगेर
15. श्री बिनोद कुमार, गोपालगंज
16. श्री भीम प्रसाद बरनवाल, झाझा
17. श्री एस.पी. श्रीवास्तव, मुगलसराय
18. श्री उमा शंकर प्रसाद, मुज़फ्फ़रपुर
19. श्री रमेश चन्द्रा, लखनऊ
20. श्री हरपाल सिंह, एटा
21. श्री जटाशंकर लाल, गया
22. श्री केदार राय, मधुबनी
23. श्री सतीश कुमार, समस्तीपुर
24. श्री प्यारे मोहन, बक्सर
25. श्री बैकुंठ चौधारी, पटना
26. श्री आशुतोष घोष, भागलपुर
27. श्री संजीत कुमार, हाजीपुर
28. कर्नल मानवेन्द्र, मुम्बई
29. श्री रवीन्द्र कुमार, मुम्बई
30. श्री अचिंत कुमार, नवी मुम्बई

उपरोक्त सज्जनों को इज़ाज़त दी जाती है कि वे केवल भाइयों को एकत्र करके सत्संग करा सकेंगे। उन्हें या नये भाइयों को तालीम (शिक्षा) देने या बैत (दीक्षा) देने की इजाज़त नहीं है।

उपरोक्त घोषित इजाज़तें आगामी घोषणा होने तक जारी रहेंगी और यदि इनके अतिरिक्त किसी के पास कोई और किसी भी प्रकार की इजाज़त है तो वह स्वत: ही प्रभावहीन हो जाती है।

(ह.)

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

अध्यक्ष एवं आचार्य

दिनांक: 6-10-2019 रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड) ग़ाज़ियाबाद

प्रतिलिपि - मंत्री, रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद को निर्देशित करते हुए कि इस सूची को राम सन्देश में प्रकाशित करने की व्यवस्था करें।

विवेक विचार

आत्म चिन्तन से शान्ति

विचारों के प्रबंधन के लिए दो अभ्यास बड़े प्रभावी हैं। प्रातः शान्त चित्त होकर बैठना और रात्रि को सोने से पहले स्वयं का 'आडिट' (लेखा-जोखा) करना।

प्रातः खुले में शान्ति से बैठें, दौड़ते-भागते विचारों की लगाम को कसने या किसी प्रकार के हठयोग करने की आवश्यकता नहीं है। बस बैठें और अपनी श्वास पर ध्यान जमायें, उसका आना जाना महसूस करते रहें। मुश्किल से दस मिनट लगेंगे कि आपकी श्वास गहरी होती जायेगी। आनन्द आने लगेगा। इस अभ्यास को एक घण्टे प्रतिदिन करें, फिर देखें उसका प्रभाव।

सोने से पहले, दिन में किये गये अपने कार्यों और व्यवहार का 'आडिट' करें। इसके लिए पन्द्रह मिनट बहुत हैं। सोचें कि जो काम किया है वो गलत था या सही, कैसा व्यवहार था दूसरों के प्रति, कैसी भाषा थी, उससे वातावरण या कोई कितना अशान्त हुआ, क्या वैसा करना जरूरी था? यदि नहीं तो आगे वैसा नहीं हो- बस इसी से हो जायेगी 'आडिट'।

श्वास को लयबद्ध बनाने में (rhythmic breathing regulation) मनभावन संगीत सुनना, स्वयं गाना, प्रार्थना या कीर्तन आदि सहायक हो सकते हैं, क्योंकि ये सब कार्य विचार श्रृंखला को केन्द्रित करते हैं।

जीवन में समय प्रबंधन के लिए प्राथमिकता निर्धारण, समय का सदुपयोग, भौतिक आर्कषण से यथा सम्भव दूरी, स्वाध्याय तथा अच्छे लोगों के साथ सहयोग और सद्भाव के सम्बन्ध बनाये रखना उपयोगी होता है।

– *स्वामी विवेकानन्द*

ईश्वर को जान लो

उस एक ईश्वर को जानो, उसे जानने से तुम सभी कुछ जान जाओगे। एक के बाद शून्य लगाते हुए सैकड़ों और हजारों की संख्या प्राप्त होती है। परन्तु एक को मिटा डालने पर शून्य का मूल्य नहीं होता। एक ही के कारण शून्य का मूल्य है। पहले एक के बाद में बहु, पहले ईश्वर फिर जीव जगत।

मुसाफिर को नये शहर में पहुँचकर पहले रात बिताने के लिए सुरक्षित डेरे का बन्दोबस्त कर लेना चाहिए। डेरे में अपना सामान रखकर निश्चिन्त होकर शहर घूम सकते हैं। परन्तु यदि रहने का बन्दोबस्त न हो तो रात के समय अन्धेरे में विश्राम करने

के लिए जगह खोजने में बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है।

उसी प्रकार इस संसार रूपी परदेस में आकर मनुष्य को पहले ईश्वर रूपी चिर विश्रामालय प्राप्त कर लेना चाहिए, फिर निर्भय होकर अपने नित कर्त्तव्यों को करते हुए संसार में भ्रमण कर सकता है। किन्तु यदि ऐसा न हो तो जब मृत्यु की अन्धकार पूर्ण रात्रि आयेगी तब उसे अत्यन्त क्लेश एवं दु:ख भोगना पड़ेगा।

जब एक तराजू का पलड़ा तराजू के दूसरे पलड़े से भारी होकर झुक जाता है तो उसका निचला काँटा ऊपर वाला काँटे से अलग हट जाता है। इसी प्रकार जब मनुष्य का मन कामनी-कंचन के भार से संसार की ओर झुकता जाता है तो वह ईश्वर व उसके प्रेम संबन्ध से दूर हट जाता है। तब उनसे एकात्म नहीं हो पाता।

-स्वामी रामकृष्ण परमहंस

गुरु और गुरुमंत्र

अच्छा तो यही है कि साधना में किसी सद्गुरु का निर्देश हो। ध्येय कोई भी भगवत् स्वरूप हो सकता है, गुरु भी हो सकते हैं, अथवा कोई प्रिय विषय भी हो सकता है। ध्यान का प्रयोजन मन की एकाग्रता और व्यक्ति की तद्रूपकता है।

शास्त्रों में गुरु तत्व को ईश्वर तत्व से भी बढ़कर बताया गया है। भगवत् तत्व जगन्नियन्ता है- कर्मों के अनुसार ही जीव को भोग देता है। परन्तु गुरु-तत्व असीम दया और करुणा के सागर हैं। गुरु कृपा अहैतुकी है, इसलिए शक्ति भी अचिन्तय है।

गुरु तत्व आकाश की भाँति सर्वत्र विराजमान है-क्योंकि परम-तत्व और गुरु-तत्व में कोई भेद नहीं है। गुरु भगवत् स्वरूप ही हैं, उनके दर्शन, स्पर्श अथवा शब्द मात्र से ही तत्व ज्ञान हो सकता है।

गुरु को भी रेडियो स्टेशन जैसा ही समझो। गुरु मंत्र के पीछे गुरु की आध्यात्मिक शक्ति है जो शिष्य को विशेष सामर्थ्य प्रदान करती है, जैसे कि बैटरी चार्ज हो जाये। गुरु की आवश्यकता इसी कारण होती है। इसी में गुरु की महिमा नियत है।

गुरु तथा शास्त्र का काम केवल मार्गदर्शन करना है। अपरोक्ष ज्ञान की अनुभूति अथवा परोक्ष ज्ञान प्रतिभा की प्राप्ति, साधक की साधना पर आश्रित है।

सद्गुरु की प्राप्ति प्रयत्न साध्य नहीं है। जन्म-जन्मान्तर के संस्कारों से ही गुरु की प्राप्ति होती है। पहले तो सद्गुरु की प्राप्ति कठिन है, फिर यदि प्राप्ति हो भी जाये तो गुरु में पूर्ण श्रद्धा भाव कठिन है और श्रद्धा भाव भी उत्पन्न हो जाये तो गुरु कृपा कठिन है।

- ब्रह्मर्षि श्री देवराहा बाबा

संत सद्गुरु की कृपा

गुरु कृपा अथवा संत कृपा का विशेष महात्म्य है। भगवान की कृपा से जीव को मानव शरीर मिलता है और गुरु कृपा से भगवान मिलते हैं। अपने-अपने बालकों का सभी पालन पोषण करते हैं। परन्तु संत कृपा विलक्षण होती है। दीन दुखी को देखकर संत का हृदय द्रवित हो जाता है, संत सब पर कृपा करते हैं। परन्तु परमात्म तत्व का जिज्ञासु ही उस कृपा को ग्रहण करता है, जैसे प्यासा जल को ग्रहण करता है। वास्तव में सत्य तत्व की जिज्ञासा जितनी अधिक होती है, उतना ही वह उस कृपा को अधिक ग्रहण करता है। सच्चे जिज्ञासु पर संत कृपा अथवा गुरु कृपा अपने आप होती है। गुरु कृपा होने पर फिर कुछ बाकी नहीं रह जाता। परन्तु ऐसे गुरु बहुत दुर्लभ होते हैं।

पारस से लोहा सोना बन जाता है, पर उस सोने में यह ताकत नहीं होती कि दूसरे को भी सोना बना दे। परन्तु असली गुरु मिल जाये तो उसकी कृपा से शिष्य भी गुरु बन जाता है, महात्मा बन जाता है। यह गुरु कृपा की विलक्षणता है। गुरु कृपा चार प्रकार की होती है - स्मरण से, दृष्टि से, शब्द से, स्पर्श से।

गुरु के याद करने मात्र से शिष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह स्मरण दीक्षा है। जैसे मछली जल में अपने अण्डे को थोड़ी-थोड़ी देर में देखती रहती है तो देखने मात्र से ही अण्डा पक जाता है। ऐसे ही गुरु की कृपा-दृष्टि से शिष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह दृष्टि दीक्षा है। इसी प्रकार शब्द से एवं स्पर्श से भी शिष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिन्हें क्रमशः शब्द दीक्षा तथा स्पर्श दीक्षा कहते हैं।

गुरु कृपा या संत कृपा से मनुष्य को स्वर्ग अथवा नरक नहीं मिलते, मुक्ति ही मिलती है। अपितु बनावटी गुरु से कल्याण नहीं होता। जो सच्चे संत महात्मा होते हैं, वे शिष्य पर स्वतः और स्वाभाविक कृपा करते हैं। सूर्य को कोई इष्ट मानेगा तब ही वह प्रकाश देगा यह बात नहीं है। उसका प्रकाश तो स्वतः स्वाभाविक रूप से सबके लिए है, उसको चाहे कोई भी उपयोग में ले ले। ऐसे ही गुरु की कृपा, संत महात्माओं की कृपा स्वतः स्वाभाविक होती है। जो उनके सम्मुख हो जाता है, वह लाभ ले लेता है। संत कृपा को ग्रहण करने वाला जैसा पात्र होता है वैसा ही उसको लाभ होता है। वर्षा सब पर समान रूप से होती है पर बीज जैसा होता है, वैसा ही फल पैदा होता है।

भगवान की और संत महात्माओं की कृपा सब पर समान रूप से होती रहती है। जो जैसा चाहे लाभ उठा सकता है। सिर्फ गुरु बनाने से लाभ नहीं होता, गुरु की बात मानने से कल्याण होता है।

- स्वामी रामसुखदास

अमृत-वचन

- तुमने अगर भगवान को चुना है तो इसका कारण यह है कि भगवान ने तुम्हें चुन लिया है।
- जब तुम यह अनुभव करते हो कि तुम कुछ नहीं जानते, तो तुम सीखने के लिए तैयार रहो।
- अपने जीवन की चिन्ता पूरी सच्चाई के साथ भगवान पर छोड़ दो तो तुम्हारा हृदय सदा शान्त रहेगा।
- सुख के लिए मत जियो, भगवान की सेवा के लिए जियो और इससे तुम्हें जो आनन्द मिलेगा वह आशातीत होगा।
- अपने ही सुख के लिए व्यस्त रहना, असुखी होने का अचूक उपाय है। जानना अच्छा है, उसे जीवन में उतारना बेहतर है, और वैसे ही हो जाना पूर्णता है।
- सच्चे अर्न्तभाव से किया गया कर्म भी ध्यान है। ध्यान द्वारा प्रगति हो सकती है, किन्तु यदि सही अर्न्तभाव किया जाये तो कर्म द्वारा प्रगति दसगुनी हो सकती है।
- कोई चीज कठिन है इस कारण से उसे नहीं छोड़ देना है। विपरीत इसके कोई चीज जितनी अधिक कठिन हो, उतना ही दृढ़ संकल्प उसमें सफल होने के लिए होना चाहिए।
- योग का वास्तविक उद्देश्य परोपकार करना नहीं है, बल्कि भगवान को प्राप्त करना, भगवत् चेतना में प्रवेश करना और भगवान के अन्दर अपनी सच्ची सत्ता को प्राप्त कर लेना है।
- लक्ष्यहीन जीवन सदा ही दयनीय जीवन होता है। जीवन का लक्ष्य सुख नहीं। साधारण जीवन का लक्ष्य है-अपना कर्त्तव्य सम्पादन परन्तु आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य है-भगवान की उपलब्धि।
- यह कभी न भूलो कि कठिनाइयाँ जितनी बड़ी होती हैं, हमारी संभावनाएं भी उतनी ही बड़ी होती हैं। जिनमें बहुत क्षमतायें हैं, जिनके आगे बड़ा भविष्य है, उन्हें ही ज़्यादा बाधाओं, कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

- अरविन्दाश्रम पांडेचेरी की श्री माँ

कर्म सिद्धान्त

-विनोबा भावे

इस दुनिया में कर्म और उसके फल का एक कानून है। जो जैसा कर्म करेगा, वैसा उसे भुगतना पड़ेगा। आप अगर बबूल का बीज बोते हैं, तो बबूल उगेगा और आम की गुठली बोयेंगे, तो आम उगेगा। इसका नाम है 'कर्म का कानून'। इस कानून को कोई व्यक्ति या समाज बदल नहीं सकता। जैसा कर्म करेंगे, वैसा फल पायेंगे। इस कानून को ध्यान में रखकर चलना पड़ेगा। अग्नि में पांव डालेंगे तो पांव जलेगा ही। पांव न जले तो 'अग्नि से पांव जलता है', इस कानून का खण्डन हो जायेगा। मतलब वह सृष्टि का न्याय नहीं होगा। इस तरह सृष्टि में एक पक्का, अटल शक्तिशाली कानून है। कर्म का कानून कहता है कि कर्म का फल अटल है। कर्म तीन प्रकार के होते हैं- संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण। संचित कर्म यानी पुराने अनेक जन्मों के इकठ्ठे हुए कर्म। पूर्व कर्म असंख्य होते हैं। मनुष्य जब जन्म लेता है, तब उसमें से एक विशिष्ट अंश उपभोग के लिए लेकर आता है। उस अंश को 'प्रारब्ध' कहते हैं। पुराने संचित कर्म का जो ढेर है, उनमें कुछ कर्म तीव्र होते हैं, कुछ मन्द होते हैं। तीव्र कर्म भोगने के लिए ही यह जन्म मिला है, इसी का नाम है 'प्रारब्ध'। कर्म का मंद भाग जो अभी भोगने को नहीं मिला है उसका नाम है 'अनारब्ध'। वह अभी शुरु नहीं हुआ है, लेकिन ढेर पड़ा है। प्रारब्ध को आपने भोगने के लिए ले लिया है। बैंक में से आपने इतना रुपया उठा लिया है। उसी के आधार पर आपका जीवन चल रहा है। वह खत्म होते ही देह गिर जाती है।

अब आप यहाँ इस जीवन में और भी कर्म करते हैं। प्रारब्ध कर्म तो हैं ही, उसके अलावा नये कर्म कर रहे हैं। यह नया कर्म 'क्रियमाण' कर्म है। प्रारब्ध कर्म जब समाप्त हो जायेगा तो मनुष्य मर जायेगा। उसके बाद पुराना सब संचित यानी 'अनारब्ध' कर्म और यह नया किया हुआ कर्म, फिर भोगना होगा। अब यह नया किया हुआ कर्म बहुत अधिक हो तो 'अनारब्ध' और 'क्रियमाण' दोनों मिलकर 'संचित' से बड़ा भी हो सकता है। जितना भोग लिया, उससे कम-बेसी कमाया तो वो बढ़ भी सकता है और घट भी सकता है। पुनर्जन्म के कुल कर्मों का घेरा छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। यह व्यक्ति के पुरुषार्थ पर निर्भर है।

यदि परमेश्वर की कृपा हो, साक्षात्कार हो, तो सारे संचित कर्म खत्म हो सकते हैं। लेकिन प्रारब्ध कर्म तो भुगतने ही पड़ते हैं। आत्म ज्ञान हो जाये तो क्रियमाण भी बाधक नहीं होंगे। मतलब उनका लेप नहीं लगेगा, ये कर्म चिपकेंगे नहीं क्योंकि उनमें अहंकार नहीं होगा। ज्ञान और भक्ति से कर्म की वासना नष्ट होती है, जिससे कि कर्म फिर नहीं होते हैं परन्तु प्रारब्ध कर्मों को तो भोगना ही पड़ेगा। तीर निकल जाने के बाद क्या लाभ होने वाला है? पश्चात्ताप से चित्त की शुद्धि होती है और उससे आगे कर्म होना बंद हो जाता है, बर्शते कि पश्चात्ताप के साथ संकल्प हो कि ऐसे दुष्कर्म फिर मेरे हाथ से नहीं होंगे। ज्ञानी और अज्ञानी में अंतर यही है कि अज्ञानी दुखपूर्वक कर्म-फल भोगता है और ज्ञानी आनन्दपूर्वक! पश्चात्ताप से मानसिक शुद्धि होती है और पाप से फल मिलते भी हैं तो भी चित्त पर उसका असर नहीं होता है। इसी को पाप नाश समझना चाहिए।

तो, संचित और क्रियमाण, ये दोनों कर्म ज्ञान से नष्ट हो सकते हैं, पर प्रारब्ध कर्म भोगना शुरु हो गया तो उसे भोगना ही पड़ेगा। चाहे ज्ञान हो गया हो या न हुआ हो, उससे मुक्ति नहीं होती। इसलिए तो बड़े-बड़े ज्ञानी भी बीमार होकर मरे हैं। कहा जाता है कि ज्ञानी को तो बीमार पड़ना ही नहीं चाहिए। ठीक है, उसके बाद ज्ञान में तो बीमार पड़ने की शक्ति नहीं है लेकिन वो जो पूर्व कर्म हैं उसमें तो शक्ति पड़ी है। ज्ञान के कारण वह दुख सहन कर लेगा। फल तो भोगना ही होगा, परन्तु यदि जीव आत्मा में स्थिर हो जाये तो वह उसके शरीर को भोगना पड़ेगा, स्वयं वह उससे अलिप्त रहेगा। इसलिए वह फल नहीं के बराबर हो जायेगा। भक्त और ज्ञानी कर्मफल से छूटना नहीं चाहते, परन्तु फल का असर उन पर नहीं होता।

एक आम धारणा यह है कि पुण्य कार्य से पाप क्षय होता है। वास्तव में पुण्य से पाप का क्षय कभी नहीं हो सकता। आप पाप पर पुण्य का प्रहार करते हैं, तो वह वैसी ही बात हो जाती है, जैसे राक्षस पर प्रहार किया, कुछ बूंद खून टपका और हर बूंद से एक नया राक्षस खड़ा हुआ। सार यह कि किसी कर्म से किसी कर्म का नाश नहीं होता। यह बात बीजगणित से समझाई जा सकती है। अंक गणित में जैसे 5-5=0 होता है वैसा बीजगणित में नहीं होता। बीजगणित में अ-ब=अ-ब होता है। पुण्य से पाप कटता नहीं। पुण्य का खाता अलग है और पाप का खाता अलग है। पुण्य का और पाप का, दोनों का फल अलग-अलग चखने को मिलेगा। कर्म का फल भोगे

बगैर समाप्त नहीं होता। कर्म नाश तो आत्मज्ञान से ही संभव है।

पाप कर्म मुक्ति कार्य का विरोधी है, यह तो सभी जानते हैं। लेकिन कितनी ही बार पुण्य भी मुक्ति के मार्ग में बहुत बड़ा रोड़ा बन जाता है। वह पाप से कम नहीं होता। कारण लोग पाप को तो पाप समझ सकते हैं। लेकिन जब पुण्य सौम्य, सुन्दर, उज्जवल रूप धारण कर मानव के सामने खड़ा हो जाता है, तब भ्रम पैदा हो जाता है और वह मुक्ति के बदले उसे ही सब कुछ समझ बैठता है। इस प्रकार बुरी तरह ठगा जाता है।

पुण्य कर्म करने से चित्त शुद्धि होगी और चित्त की शुद्धि होने पर पाप करने की बुद्धि नहीं रहेगी, यह संभव है। परन्तु उससे पूर्व पापों का क्षय नहीं होता। वो तो होगा आत्मज्ञान से। आत्मज्ञान पाप को तो खत्म करता ही है, पुण्य की भी आवश्यकता नहीं रहने देता। दोनों को खत्म करता है।

कर्म-फल से हम तुरन्त मुक्त हो सकते हैं, यदि अहंकार से मुक्त हो जायें। लेकिन मनुष्य अपने अहंकार से चिपका रहता है। अहंकार छूट जाता है, तो पुराने पाप खत्म हो जाते हैं। लेकिन अहंकार कहाँ छूटता है? ''ये मैंने किया, वह मैंने किया'' इस तरह का अहंकार मनुष्य को रहता ही है। इसलिए उसको पाप-पुण्य का फल भोगना ही पड़ता है। अहंकार को तोड़ सकें तो सबसे मुक्त हो सकते हैं।

कर्म सिद्धान्त आपको दंड देने के लिए नहीं है, यद्यपि सजा देना ईश्वर प्रेम का ही लक्षण है। वह आपको सुधारना चाहता है। उसमें अपवाद हो सकते हैं। जैसे कानून से फांसी होती है, परन्तु राष्ट्रपति फांसी को क्षमा भी कर सकते हैं। न्याय से बढ़कर भी एक चीज है, दया। हमारे दुराचरण का फल हमें मिलना ही चाहिए, पर ईश्वर की कृपा हो जाए तो उससे छुटकारा भी हो सकता है, बशर्ते पश्चात्ताप हो। तब फिर कितना भी दुराचारी हो, पश्चात्ताप के कारण धर्मात्मा बन सकता है।

कर्म का परिणाम अवश्य भोगना पड़ता है, यह एक महान सिद्धांत है। सिर्फ कर्म का नहीं, मन में जो अच्छे-बुरे विचार आते हैं, उसका फल भी भुगतना पड़ता है। जो शब्द इस समय उच्चारण किये जा रहे हैं, वे जगत को व्याप्त हो रहे हैं, चाहे कोई उनको सुन सके या नहीं। जैसे अच्छे-बुरे शब्द फैलते हैं, उसी प्रकार अच्छे-बुरे मानसिक विचारों का भी प्रसार होता है और उसका फल भोगना पड़ता है।

कुछ कर्म मिले-जुले होते हैं, तो कुछ व्यक्तिगत। कभी ऐसा भी होता है कि एक

के गलत काम का फल दूसरे को भोगना पड़ा। परिवार में ऐसा होता है। किसी एक की गलती का फल सबको भुगतना पड़ता है। परिवार में एक लड़का चोर निकला, तो इसकी जिम्मेवारी बाप पर भी है। वैसे ही एक व्यक्ति के कर्म का फल सारे समाज को भोगना पड़ता है। इस तरह समाज की जिम्मेवारी व्यक्ति पर और व्यक्ति की जिम्मेवारी समाज पर है। कर्म के कानून में दोनों अलग नहीं है।

साधारणत: माना गया है कि कर्म बंधनकारक है। प्रश्न पूछा जाता है कि कर्मबंधन यानी क्या? कर्मबंधन है, अपने चित्त पर कर्म का आवेग। मनुष्य कर्म करते-करते उसके प्रभाव में आ जाता है। और फिर कर्म उसको खींचकर ले जाता है। जैसे मनुष्य घोड़े पर चढ़ता है, तब लगाम अपने हाथ में रही तो ठीक, अन्यथा घोड़ा ही उसको चाहे जहां खींच ले जाता है। वैसे ही कर्म के कर्त्ता हम होने पर भी कर्म का प्रभाव हम पर पड़ता है और वह हमें खींच ले जाता है। दुष्कर्मों का फल तो खराब ही होता है, इसलिए उन्हें तो छोड़ना ही चाहिए। परन्तु सत्-कर्मों की लगाम भी अपने ही हाथ होनी चाहिए। अन्यथा उसमें भी अहंकार, आसक्ति आदि पैदा हो सकते हैं। जैसे देशसेवा सत्कर्म है, उसमें सब शुभेच्छा से ही आते हैं, पर उसमें भी मतभेद, विरोध, दुश्मनी की हद तक पहुँच जाते हैं। यह कर्म का हम पर प्रभाव पड़ा।

ज्ञानी मनुष्य भी प्रकृति में स्थित होते हैं, जैसे कि दूसरे लोग। सामान्य मनुष्य के नाते उनका खाना-पीना, घूमना, सोना चलता रहता है। फिर भी वह अपनी ओर से न कोई कर्म करता है, न किसी कर्म का परिणाम उस पर होता है। वह कर्म के बंधन में नहीं पड़ता, क्योंकि वह नचाने वाली तृष्णा से मुक्त है। वह न 'कर्त्ता' है और न किसी का 'कर्म' बनता है।

(सौजन्य: पुस्तक 'कर्म विवेचना', सर्व सेवा संघ प्रकाशन)

तेरी याद में मेरा झूमना
मेरी हज है, मेरी नमाज है।
ये अगर गुनाह है तो हुआ करे
मुझे इस गुनाह पर नाज़ है।

जब ज़िंदगी रुलाये तो समझना
गुनाह माफ़ हो गये।
और जब ज़िंदगी हँसाये तो
समझना दुआ कबूल हो गयी है।

शोक समाचार

सखेद सूचना दी जाती है कि वर्ष 2018 व वर्ष 2019 में रामाश्रम सत्संग के जिन बहन–भाइयों का देहावसान हो गया है उनकी सूची इस प्रकार है :–

चकिया के-

1. श्री रामसूरत सिंह का 9.1.2018 को
2. श्री सन्मित्र कुमार पाण्डे (हिन्दी बहन के पुत्र) का 30.6.2018 को।
3. श्रीमती सुशीला देवी पत्नी श्री राम प्रवेश का 2.9.2018 को।
4. श्री विक्रमा साहू का (110 वर्ष की आयु में) 7.10.2018 को।
5. श्री हरिवंश सिंह का 25.10.2018 को।
6. श्री लल्लन प्रसाद का 2.11.2018 को।
7. श्री राम सूरत का 21.12.2018 को।
8. श्री रामजी मौर्य का 25.12.2018 को।
9. श्री रामवृक्ष सिंह (चकिया के वरिष्ठ शिक्षक) का 23.3.2019 को।
10. श्रीमती इन्दु देवी पत्नी श्री मनोज पाण्डे का 22.4.2019 को।

- रेवाड़ी की श्रीमती उर्मिला चन्द्रा पत्नी श्री महेश चन्द्रा जी का 1.2.2019 को।
- ग़ाज़ियाबाद के श्री बलराम प्रसाद का 24.2.2019 को।
- डा. श्रीमती श्रुति खन्ना पत्नी श्री राघव खन्ना (श्री मदन खन्ना की पुत्रवधु) का 8.3.2019 को।
- वाराणसी के श्री सूरज बाबू यादव (मूल निवासी आरा) का 10.3.2019 को।
- ग़ाज़ियाबाद के वरिष्ठ सत्संगी श्री डी.एन. कुलश्रेष्ठ का 31.3.2019 को।
- मुजफ्फ़रपुर के प्रोफेसर एस.पी. वर्मा का 1.5.2019 को।
- ग़ाज़ियाबाद के वरिष्ठ सत्संगी श्री ईश्वर सहाय सक्सेना का 21.6.2019 को। आप सत्संग के कोषाध्यक्ष भी थे।
- मनीष (बब्बू जी) की माताजी श्रीमती गायत्री सिन्हा (पत्नी श्री रामेश्वर प्रसाद, मुजफ्फ़रपुर) का 27.7.2019 को।
- श्रीमती किशोरी वर्मा (नौयडा के श्री राजीव श्रीवास्तव, की माताजी) का 31.7.2019 को।
- सासाराम के श्री राम प्रवेश श्रीवास्तव की माता जी श्रीमती सरस्वती देवी का 1.8.2019 को।
- आरा के पुराने सत्संगी श्री बनारसी प्रसाद जी का निधन दिनांक 14.09.2019 रात्रि को हुआ।

परम पुज्य गुरुदेव के चरणों में प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो तथा इनके विरहाकुल परिवारी प्रियजनों को वियोग–व्यथा सहने की शक्ति और धैर्य मिले।

– डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

बस नाम ही तो रह जाता है

राजा शुद्धोधन एक बार राज्य भ्रमण करने के लिए अपने महल से निकले, रास्ते में एक वृद्ध को देखा, जो एक पौधा लगा रहा था। राजा वहीं रुक गए और वृद्ध के पास जाकर उससे पूछा,'आप यह पौधा क्यों लगा रहे हैं? क्या इसके फल आपको मिलेंगे?'

वद्ध ने जवाब दिया,'नहीं महाराज इस पौधे के फल मुझे नहीं मिलेंगे, क्योंकि जब तक यह बड़ा होगा और फल देगा, मैं इस लोक में नहीं रहूंगा। पर हमारी आने वाली पीढ़ी को इसके स्वादिष्ट फलों का स्वाद मिलेगा। ठीक उसी तरह जैसे आज हम अपने पूर्वजों के लगाए फलों का स्वाद ले रहे हैं और इसके बदले हम उनको धन्यवाद भी देते हैं। ठीक इसी प्रकार मेरे द्वारा लगाया गया यह पौधा बड़ा होकर जब तक फल देता रहेगा, मेरा नाम भी चलता रहेगा। यानी मेरे मरने के बाद भी लोग मुझे याद रखेंगे। वैसे भी मानव ना कुछ लेकर आता है और ना ही कुछ साथ ले जाता है।

अगर इस दुनिया में कुछ शेष रहता है, तो वह है, अच्छे कर्म। इसलिए मैं स्नेह के साथ इस पेड़ को लगा रहा हूं ताकि मेरे जाने के बाद मुझे इससे याद करें।' वृद्ध के इतने ऊंचे विचार सुनकर राजा शुद्धोधन काफी प्रसन्न हुए और बोले, 'बाबा, आपकी यह बात हमारे लिए भी संदेश है। अब हम भी ऐसा ही करेंगे।' फिर राजा वृद्ध को धन्यवाद देकर चले गए।

राम संदेश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार–शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम–सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट–छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। वार्षिक चन्दा 20 (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जाता है। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

राम संदेश

रजिस्टर्ड ऑफिस

9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड,
गाज़ियाबाद–201009

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी–66, सैक्टर–6, नोएडा–201301